# बाइबल टीचर

वर्ष 22 फरवरी 2025 अंक 3

सम्पादकीय

यीशु के क्रूस के दुश्मन

क्रूस की मृत्यु जो रोमी राज्य के समय दी जाती थी, बड़ी ही भयानक और दर्दनाक होती थी। जब अपराधियों को क्रूस की मृत्यु दी जाती थी, तब बहुत सारी भीड़ भी वहां जमा होकर, इस सारे नज़ारे को देखा करती थी।

प्रेरित पौलुस के समय में इस क्रूस के विषय में कई बाते की जाती थी। एक बार पौलुस ने कहा था ''क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।'' (1 कुरि. 1:18)। पौलुस को यह बात इसलिये कहनी पड़ी क्योंकि उस समय में यहुदी लोग विशेषकर उनके गुरू उसके बहुत विरोध में थे। वे पुरानी व्यवस्था को मानने वाले लोगों पर रीति-रिवाज़ों की बातों को थौपते थे। परन्तु पौलुस उन्हें प्रभु यीशु और उसके क्रूस के विषय में बताता था। पुराने नियम को माननेवालें फरीसी लोग यीशु के क्रूस का विरोध करते थे, और इसीलिये वे यीशु के क्रूस के दुश्मन थे।

उस समय के लोग यीशु के क्रूस पर दिये गये बलिदान को समझ नहीं पा रहे थे। आज भी अनेको लोग यीशु के क्रूस की कथा को समझ नहीं पाते, और पौलुस कहता है कि एक ही सुसमाचार है और वो है ''प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, कब्र में गाड़ा गया, तथा तीसरे दिन मृतको में से जी उठा'' (1 कुरि. 15:1-4)। आगे वह कहता है कि उन लोगों को जिन्होंने सुसमाचार को मानकर बपतिस्मा लिया था। ''मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया, उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे हो। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं। पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते हैं, और मसीह के सुसमाचार

को बिगाड़ना चाहते हैं (गलातियों 1:6-7)। जितने लोग मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं, वे यीशु के क्रूस के शत्रु हैं।

हमारा यह विश्वास है और बाइबल यह शिक्षा देती है कि केवल एक ही परमेश्वर है जो इस संसार को चला रहा है। (इफि. 4:5-6; प्रेरितो 17:13-24)। जो यह सिखाते हैं कि एक से अधिक परमेश्वर हैं वे क्रूस के बैरी हैं। परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में केवल एक ही बिचवई है अर्थात् यीशु मसीह। इसलिये कोई भी पोप या धार्मिक गुरू परमेश्वर और मनुष्य के बीच ही बिचवई नहीं है। केवल यीशु हमारा बिचवई है (1 तीमु. 2:5)।

आज बहुत से लोग परमेश्वर और यीशु में विश्वास नहीं करते। इस प्रकार के लोग मसीह के क्रूस के बैरी हैं। कई लोग यह मानते ही नहीं कि यीशु ईश्वरीय है। बाइबल में इस प्रकार से लिखा है कि यीशु आदि से परमेश्वर के साथ था। (यूहन्ना 1:1-14)। यीशु ने पृथ्वी पर रहकर बहुत से ऐसे आश्चर्यक्रम किये जो मनुष्य की समझ से बाहर है, इसलिये हम कह सकते हैं कि उसकी ईश्वरीयता पर संदेह करनेवाले उसके क्रूस के दुश्मन हैं। कई ऐसे भी हैं जो यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने पर संदेह करते हैं। इस प्रकार के लोग उसके क्रूस के शत्रु हैं।

यीशु मसीह ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा यहुदियों और गैर-यहुदियों के बीच की दीवार को ढाह दिया। (इफि. 2:13-16)। आज संसार में बहुत सारी कलीसियाऐ हैं जो मनुष्यों की शिक्षाओं पर आधारित हैं। यदि हम मसीह की शिक्षा के विरूद्ध जाते हैं तब हम क्रूस के शत्रु बन जाते हैं। नये नियम के अनुसार हम पढ़ते हैं कि यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाया था, और यह उसके नाम से जानी जाती है। (मत्ती 16:18)। यीशु ने मसीही एकता के लिये प्रार्थना की थी (यूहन्ना 17:20-21)। परन्तु आज मसीहीयत बटी हुई है तथा लोगों की अपनी कलीसियाऐं तथा विभिन्न शिक्षायें प्रचलित हैं। साम्प्रदायिक कलीसियाओं और मसीह की कलीसियाओं के बीच एक दीवार खड़ी हुई है। वे जितने लोग जो मसीह की शिक्षा के विरूद्ध चल रहे हैं वे मसीह के क्रूस के बैरी हैं। (2 यूहन्ना 1:9-11)।

यीशु ने उद्धार की योजना के विषय में कहा था कि "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा"। (मरकुस 16:16)। क्रूस के दुश्मन कहते हैं कि केवल यीशु में विश्वास कर लो तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा तथा वे कहते हैं कि बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। पौलुस कहता है, मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं (गलातियों 2:20)। यदि आप यीशु के क्रूस से प्रेम करते हैं तो उसकी आज्ञाओं को मानियें।

अनुग्रह का सुसमाचार

सनी डेविड

मित्रो, इस पाठ में आप परमेश्वर के उस सुसमाचार को पढ़ते हैं जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत के सब लोगों से ऐसा प्रेम रखा कि उसने उन्हें पाप से मुक्ति दिलाने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। परमेश्वर का पुत्र उसका वह सामर्थी वचन था जिसके द्वारा उसने सारे जगत को उत्पन्न किया था। परन्तु जगत को पाप में देखकर उसने उसे मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया । वह पृथ्वी पर इसलिये आया ताकि परमेश्वर की इच्छानुसार वह अपने आपको जगत के सब लोगों के पापों के लिये बलिदान करके पापों का प्रायश्चित बन जाए। आज से उन्नीस सौ साल पहिले यरुशलेम के खोपड़ी नामक स्थान पर जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था तो वह आपके और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया गया था। परमेश्वर की इच्छा हैं और वह चाहता है कि पृथ्वी पर सारे लोग उसके इस सुसमाचार को जानें। इस कार्यक्रम का एकमात्र उद्देश्य आपको परमेश्वर के इस सुसमाचार से परिचित कराना है। परमेश्वर के पुत्र मसीह ने आज्ञा देकर कहा था कि इस सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में और सृष्टि के सारे लोगों में किया जाए। यह सुसमाचार आवश्यक हैं, महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बिना किसी भी मनुष्य का उद्धार नहीं हो सकता। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर का यह सुसमाचार हर एक मनुष्य के उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। यह उसके अनुग्रह का सुसमाचार है। प्रत्येक मनुष्य जो इस सुसमाचार को जानता है और इससे परिचित है, उसका यह कर्त्तव्य है कि वह इसके बारे में अन्य लोगों को बताए। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह लिखकर यों कहता है, कि, "मैं यूनानियों का और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निबुद्धियों का कर्ज़दार हूं। सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १:१४-१६)। और एक अन्य स्थान पर वह फिर कहता है, "परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूं वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभ यीशु से पाई है।" (प्रेरितों २०:२४)।

मैं आज आपको बताना चाहता हूं, मित्रो, कि प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है। जब उसके पुत्र का जन्म हुआ था, तो बाइबल में लिखा है, "और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सबने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।" (यूहन्ना १:१४, १६)। इसका अर्थ यह है, कि जब यीशु का

जन्म हुआ था, तो वह परमेश्वर के अनुग्रह तथा उसकी सच्चाई से परिपूर्ण था। उसके द्वारा और उसमें परमेश्वर ने जगत पर अपने अनुग्रह को प्रगट किया। अनुग्रह का अर्थ है, एक ऐसी भलाई जिसके बदले में कुछ भी नहीं किया जा सकता, एक ऐसा वरदान जिसे कुछ भी करके या जिसके बदले में कुछ भी देकर प्राप्त नहीं किया जा सकता। या जैसे कि बाइबल कहती है कि, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)। अर्थात्, अनुग्रह वह वस्तु है जिसका दाम नहीं चुकाया जा सकता, और जिसे किसी भी प्रकार का प्रयत्न करके हासिल नहीं किया जा सकता। यीशु मसीह परमेश्वर का अनुग्रह है, और उसकी मृत्यु मनुष्य के लिये परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है। क्योंकि यदि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम न रखता तो वह अपने पुत्र को जगत में न भेजता। और यदि उसे मनुष्य की आत्मा को बचाने की चिन्ता न होती तो वह अपने पुत्र को जगत के पापियों के लिये क्रूस पर चढ़वाकर उसके बलिदान के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित न करवाता। सो हम देखते हैं, कि इन सब बातों का कारण परमेश्वर का अनुग्रह था। क्योंकि वह चाहता है कि हम में से कोई भी अपने पापों में नाश न हो परन्तु उसके अनुग्रह से अनन्त जीवन प्राप्त करे। बाइबल का लेखक कहता हैं "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धाारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।" (तीतुस. २:११-१५)। "क्योंकि हम भी पहले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग-रंग की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई, तो उसने हमारा उद्धार किया और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्रात्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंड़ेला। जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।" (तीतुस. ३:३-७)।

सो, बाइबल में लिखी इन बातों से हम यह सीखते हैं, कि हमारे उद्धार का कारण हमारे अपने काम या प्रयत्न नहीं हैं परन्तु परमेश्वर का वह अनुग्रह है जो उसके पुत्र के द्वारा क्रूस पर प्रगट हुआ। परन्तु इसका अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से जगत के सारे लोगों का उद्धार हो चूका है? क्या इसका अर्थ यह है, कि उसके अनुग्रह से जगत के सारे लोग उसके स्वर्ग में प्रवेश

करेंगे? क्या इसका अर्थ यह है, कि मनुष्य चाहे जैसा भी जीवन व्यतीत करे उसका उद्धार हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट हुआ है? या, क्या इसका अर्थ यह है, कि मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य ठहरने के लिये कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है? हम में से जो माता-पिता हैं हम अपने बच्चों को खाना, कपड़ा, और उनकी आवश्यकता की सभी चीजें देते हैं, और यहां तक कि कभी-कभी उनकी आवश्यकताओं को पुरा करने के लिये हमें अपनी आवश्यकताओं को भी भूलना पड़ता है। क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। हम स्वयं दुखी होकर उन्हें सुखी देखना चाहते हैं। इसलिये नहीं कि हमें उनसे कुछ लालच है, या उन्होंने हमारे लिये कुछ किया है, परन्तु केवल इसलिये क्योंकि हम अपने बच्चों से प्रेम रखते हैं। और जो वस्तुएं वे हम से प्राप्त करते हैं वे अनुग्रह के समान उनके लिये मुफ्त ठहरती हैं। परन्तु क्या हम अपने बच्चों से कुछ भी नहीं चाहते? हम चाहते हैं कि वे हमारा आदर करें, और हमारी आज्ञा मानें। ठीक यहीं बात परमेश्वर के अनुग्रह के सम्बन्ध में भी हम देखते हैं। उसने दुख उठाकर हम पर अपने अनुग्रह को प्रगट किया, अर्थात् उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिये बलिदान कर दिया, ताकि हम उद्धार पाएं। परन्तु वह चाहता है कि हम उसका आदर करें, और उसका आदर उसकी आज्ञा मानकर ही प्रगट किया जा सकता है, सो वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं पर चलें। सो न केवल बाइबल हमें परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में ही बताती है, परन्तु इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य ठहरने के लिये हमें क्या करना चाहिए।

सबसे पहिले, बाइबल में लिखा है, कि हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए। (इब्रानियों ११:६)। फिर बाइबल कहती है, कि परमेश्वर की इच्छा है, कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाऐं। (यूहन्ना ३:१६)। और फिर परमेश्वर की आज्ञा है, कि हम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए। (प्रेरितों १७:३०, ३१)। और ऐसा करने के बाद परमेश्वर अपनी पुस्तक के द्वारा कहता है, कि हम में से हर एक को अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। (प्रेरितों २:३८; २२:१६)। बपतिस्मा लेने का अर्थ है, अपने वर्तमान जीवन को जल-रूपी कब्र के भीतर सदा के लिये दफ़ना देना, जैसे कि एक मरा हुआ इन्सान कब्र के भीतर गाड़ा जाता है, और उस जल में से बाहर निकलकर नए जीवन में प्रवेश करना (यूहन्ना २:३, ५; प्रेरितों ८:३५-३९)। और फिर वह चाहता है, कि हम उसके पुत्र मसीह में एक नए जीवन की चाल चलें (रोमियों ६:३-६), जो उसकी इच्छा तथा आज्ञानुसार है।

मित्रो, परमेश्वर का अनग्रह प्रगट है, और वह चाहता है कि हम में से प्रत्येक जन उसके अनुग्रह से उद्धार पाए।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानकारी चाहते हैं, तो हमें लिखकर सुचित करें। प्रभु आप सब को अपनी आशीष दे।

पवित्र आत्मा का दान

जे. सी. चोट

हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और हाथ रखने के नाप का अध्ययन कर चुके हैं, और अब हम पवित्र आत्मा के दान पर आ गए हैं जिसका वायदा सब मसीही लोगों से किया गया है।

एक ओर जहां प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, और कुछ चुने हुए चेलों को हाथ रखने का नाप मिला था जो कि प्रेरितों के द्वारा दिया गया था, वहीं अन्य सब लोगों को जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना है यानी हम सबको, और प्रभु के लौटने तक के सब लोगों को "पवित्र आत्मा का दान" मिला है।

जब हम प्रेरितों के काम के अध्याय 2 को देखते हैं तो पाते हैं कि किस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरित यरूशलेम में ठहरे हुए थे। यह यहूदियों का एक पर्व था जिस कारण दुनिया भर से यहूदी लोग वहां पर आए हुए थे। इसी दौरान परमेश्वर का पवित्र आत्मा प्रेरितों के ऊपर उतरा, और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने पर वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे, और लोग अपनी-अपनी भाषा में उनके प्रचार को सुन रहे थे। प्रेरित पतरस तथा अन्य प्रेरित वहां प्रभु यीशु का प्रचार कर रहे थे। इस घटना के विषय में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, 'हे भाइयो, हम क्या करें?' पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:37, 38)।

इन वचनों में हम देखते हैं कि जो लोग विश्वासी बने थे, उन्होंने अपने पापों से मन फिराया था, अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था, और उन्हें पवित्र आत्मा का दान दिया गया था। पवित्र आत्मा का दान, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाने वाले पवित्र आत्मा के नाप से अलग था। इनके बारे में वचन में पढ़ने पर इन में से हर किसी को जिस भी संदर्भ में यह मिलता है उसमें दूसरे से अलग देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए हम प्रेरितों 2:1-4 में साफ देख सकते हैं कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। प्रेरितों 6 तथा 8 अध्यायों में हम देखते हैं कि प्रेरितों ने कुछ चेलों के ऊपर हाथ रखे थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। फिर प्रेरितों 2:38 में हमने देखा था कि पवित्र आत्मा का दान दिए जाने का वायदा उन सब लोगों से किया गया था जिन्होंने अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए और परमेश्वर की संतान के रूप में उसके साथ सहभागिता करने के लिए, प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया था।

प्रेरितों 6 अध्याय में हम फिर देखते हैं कि चेलों के बीच में चुने गए सात जनों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला यद्यपि क्योंकि अगर मिला होता तो उनके ऊपर प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दिए जाने की कोई

आवश्यकता नहीं होनी थी। हां बेशक उनके लिए कहा गया है कि वे सुनाम पुरुष थे, और पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे। तो फिर इसका क्या अर्थ हुआ कि वे "**पवित्र आत्मा से परिपूर्ण**" थे? एक बात तो पक्की है कि इसका अर्थ यह नहीं था कि उनके पास आश्चर्यकर्म करने, अन्य भाषाओं में बोलने जैसी कोई सामर्थ थी। इसके बजाय इसका अर्थ यह था कि उन्हें आत्मा का गैर-चमत्कारी दान मिला हुआ था। उन्हें यह दान कब मिला था? जब उन्होंने प्रेरितों 2:38 के अनुसार प्रभु की आज्ञा को मान कर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था। यह आत्मा का वही गैर चमत्कारी दान है जो हर उस व्यक्ति को मिलता है जिसने अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु की आज्ञा को माना है। या यूं कहें कि यह आत्मा का वह नाप है, जो प्रभु के द्वारा लोगों को उसकी आज्ञा मानने के समय दिया जाता है।

जब पतरस तथा दूसरे प्रेरितों से यह पूछने के लिए कि वे मना करने के बावजूद भी यीशु का प्रचार क्यों कर रहे हैं? महासभा के सामने लाया गया तो उन्होंने महायाजक और उसके साथ के लोगों को इस प्रकार से जवाब दिया कि "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है। हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ पर ऊंचा कर दिया कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं" (प्रेरितों 5:29-32)।

एक ओर जहां कहा जा सकता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों में से चुनिंदा लोगों को दिया जाता था, वहीं पवित्र आत्मा का दान यानी पवित्र आत्मा का गैर चमत्कारी दान भी परमेश्वर की आज्ञा को माननेवालों को दिया जाता था, और आज भी दिया जाता है। आप देख सकते हैं कि आज्ञा माननेवालों को पवित्र आत्मा ही दिया जाता है और अगर उन्हें पवित्र आत्मा दिया जाता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा उन में वास करता है।

पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीहियों को लिखा, "इसलिए हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन-कौन सी आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो: अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान, जो परमेश्वर को नहीं जानतीं कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है; जैसा कि हम ने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिए नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिए बुलाया है। इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह

मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, **जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है** (किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह आवश्यक नहीं कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं, क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है" (1 थिस्सलुनीकियों 4:1-9)।

इन वचनों में पौलुस मसीहियों को अपने आप को शुद्ध तथा पवित्र रखने, और एक-दूसरे के लिए उचित आदर दिखाने को प्रोत्साहित कर रहा है, क्योंकि वे परमेश्वर के लोग थे और उन्हें पवित्र आत्मा दिया गया थाद्य संदर्भ में देखें तो पता चलता है कि पौलुस सब मसीहियों से बात कर रहा है, और वह कहता है कि परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा दिया था।

पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों से कहा, "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो" (1 कुरिन्थियों 3:16,17)।

उसने फिर कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो" (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

पौलुस यह स्पष्ट कह रहा था कि हमारी देह आत्मा का मन्दिर हैं, पर वह मसीही व्यक्ति के अंदर गैर चमत्कारी ढंग से कैसे रह सकता है? वैसे ही जैसे मसीह हम में वास करता है (कुलुस्सियों 1:27), और परमेश्वर हम में वास करता है (इफिसियों 4:6) और हम मसीह में और परमेश्वर में वास करते हैं (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)।

"... कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ" (इफिसियों 3:16)

"और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है" (इफिसियों 4:6)।

"परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं" (रोमियों 8:9)।

ऐसे लोग हैं जो यह कहते हुए कि आत्मा मसीही लोगों के अंदर पवित्र शास्त्र के द्वारा प्रतीकात्मक रूप में वास करता है, इस बात का इनकार करते हैं कि आत्मा सचमुच में "वास करता" है। उनका तर्क यह होता है कि बाइबल न की आत्मा परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है इसलिए **वह वचन के द्वारा हमारे अंदर वास करता है।**

- इस तथ्य में रोमियों 8:11 जैसी आयतों को पढ़ने में मिलता हैं कि आत्मा हमारे अंदर वास करता है। इस शिक्षा से कई समस्याएं हैं। बहुत से लोगों को इसे अपने विश्वास के अनुसार पढ़ने के लिए **"वचन के द्वारा"** को कोष्ठक में डालना पड़ता है: "यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है [वचन

के द्वारा]; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा [वचन के द्वारा] हुआ है, न जिलाएगा" (रोमियों 8:11)।

क्या प्रकाशितवाक्य 22:18 में **"वचन में जोड़ने"** के बारे में कुछ कहता है?

"मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा।"

- इस समस्या के बाद यह तथ्य है कि जिस समय पतरस ने यह कहते हुए प्रचार किया था कि मन फिराकर बपतिस्मा लेने वालों को पवित्र आत्मा का दान दिया जाएगा उस समय तक नया नियम अभी लिखा नहीं गया था! यदि वास का यह **"दान"** स्वयं आत्मा न होकर पवित्र शास्त्र था, तो उस दिन तीन हजार लोगों को किस प्रकार से वह मिल गया होगा जो दशकों बाद तक पूरा नहीं हुआ था?
- और फिर यह समस्या है कि पवित्र शास्त्र के पुराने नियम वाले भाग के अधीन रहने वाले लोगों को **"पवित्र आत्मा का दान"** दिए जाने की बात कभी नहीं की गई। परमेश्वर का वचन उन में वास करता था। तो यह कभी क्यों नहीं कहा गया कि पवित्र आत्मा इस्राएल जाति में "वास करता" था?
- और अंत में, कुछ मनुष्य अपने जीवन में पवित्र शास्त्र की अलग-अलग मात्रा आत्मसात करते हैं। यदि उनके मनों में केवल पवित्र शास्त्र ही "वास" करता है तो क्या कुछ लोगों में 20 प्रतिशत जबकि अन्यों में 35 प्रतिशत आत्मा होगा? और उनका क्या होगा जिन्होंने पवित्र शास्त्र के अधिकतर भाग को याद किया हुआ है और प्रेरितों 2:38 में दिए गए निर्देशों के अनुसार कभी वचन के अनुसार सही बपतिस्मा नहीं लिया? उनके दिमाग में तो पवित्र शास्त्र वास्तव में उनसे कहीं अधिक होगा जो परमेश्वर के परिवार का भाग हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि चाहे उन्होंने उसे कभी नहीं माना जो परमेश्वर ने चाहा कि **"पवित्र आत्मा का दान"** पाने के लिए व्यक्ति को क्या करना आवश्यक है, उनमें आत्मा का अधिक वास है?

प्राप्तकर्त्ताओं को कलीसिया के उद्देश्य की गहरी समझ के लिए पौलुस की प्रार्थना

(इफि. 1:15-23)

जे लॉकहर्ट

इफिसियों यानी इफिसुस के भाइयों का विचार करते हुए पौलुस ने उनकी ओर से प्रार्थनाएं कीं। 1:15-23 में हम देखते हैं कि मसीह की देह अर्थात् तेजस्वी कलीसिया के इन लोगों के लिए पौलुस ने परमेश्वर से क्या मांगा।

परिचय (इफि. 1:15-18)

इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों पर प्रगट है, तुम्हारे लिए धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूं। कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे, और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों।

आयतें 15, 16, इस कारण जो कपं जवनजव का अनुवाद है, इसका अर्थ है "इस कारण" और इसका इस्तेमाल या तो अभी-अभी जो कुछ उस ने आयत 3 से 14 में कहा उस के लिए या आयतें 13 और 14 में केवल छाप और बयाना के बारे में कही बात के लिए हो सकता है। दोनों ही मामलों में, "उस विश्वास का समाचार" और उनके "प्रेम" के लिए जो सब "पवित्र लोगों से" था, पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा था और प्रार्थना में उन्हें "स्मरण" कर रहा था। NASB में इन वाक्यांशों का अनुवाद यह अर्थ देने के लिए किया गया है कि इन भाइयों का यीशु में, जो उन के विश्वास का *पात्र* था, सराहनीय विश्वास था। उस दायरे के रूप में, जिस में उन्होंने बपतिस्मा लिया था, और जिस में वे रहकर हर प्रकार की आत्मिक आशीष का आनन्द ले रहे थे, **प्रभु यीशु** को पहचानने का वैकल्पिक विचार होगा। यीशु को यहां पर अपने विश्वास के पात्र के रूप में दिखाने को प्राथमिकता दी गई, क्योंकि इस के बाद पौलुस ने **तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से** कहा, जिसका अर्थ यह निकाला जाता है कि पवित्र लोग उन के प्रेम के पात्र थे।

इफिसियों में पाए जाने वाले, यीशु में विश्वास का जिसे ten kath humas pistin के रूप में दिखाया गया है, मूल अर्थ "the downAmong you faith" या " 'नीचे साथ' तुम विश्वास" है। पौलुस के "दैनिक जीवन के लिए प्रभु में प्रतिदिन के विश्वास" की सराहना कर रहा था। इस विश्वास ने "सब पवित्र लोगों से प्रेम" और अन्य सब मसीही लोगों के साथ इफिसियों की एकता को दिखाया। अपने भाइयों के लिए ऐसा सराहनीय है, क्योंकि यीशु ने एक-दूसरे के लिए प्रेम को वह पहचान बताया, जिस से लोग जान सकते हैं कि उसके चेले कौन हैं (यूहन्ना 13:34, 35)। यहां एक साथ दिए गए "विश्वास" और "प्रेम" 1 थिस्सलुनीकियों 1:3 और कुलुस्सियों 1:4, 5 में भी मिलते हैं। प्राचीन दस्तावेजों में आमतौर पर "विश्वास" और "प्रेम" को "आशा" के साथ दिखाया गया है। 1 थिस्सलुनीकियों 1:3 और कुलुस्सियों 1:4, 5 में पौलुस ने इन तीनों शब्दों का इस्तेमाल किया है। इफिसियों एक में उस ने आयतें 12 और 18 में "आशा" की बात की और आयत 15 में "विश्वास" और "प्रेम" को जोड़ दिया।

सुनकर जैसे शब्दों का कुछ व्याख्याकर्त्ताओं ने यह संकेत लिया है कि लेखक को इफिसुस की कलीसिया की व्यक्तिगत जानकारी नहीं थी, इस कारण लेखक पौलुस नहीं कोई और रहा होगा। परन्तु 2 तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पहला, पौलुस निजी तौर पर फिलेमोन को जानता था, और उस ने उसे "हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन" कहा (फिलेमोन 1) "प्रिय सहकर्मी" वही शब्द है जिसका इस्तेमाल पौलुस ने फिलेमोन की

पत्री के अन्त में मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका के लिए किया (आयत 24) था। हम जानते हैं कि ये लोग वास्तव में पौलुस के साथ काम करते थे। फिलेमोन ने निजी तौर पर पौलुस के साथ काम किया होगा। दूसरा, फिलेमोन को बेशक पौलुस ही विश्वास में लाया था, क्योंकि पौलुस ने कहा कि फिलेमोन का कर्ज वह "आप" भर देगा (आयत 19)। इस के बावजूद पौलुस ने कहा कि उस ने फिलेमोन के प्रेम और विश्वास के बारे में *सुना* था (आयत 5)। पौलुस के उस के विश्वास और प्रेम को सुनने का अर्थ यह नहीं है कि वह निजी तौर पर फिलेमोन को नहीं जानता था। इसका अर्थ यह है कि पौलुस ने फिलेमोन को पिछली बार मिलने के बाद से उस के बढ़ने और विश्वास में बने रहने के बारे में सुना था। इसलिए जब पौलुस ने कहा कि उस ने इफिसियों के विश्वास और प्रेम के विषय में सुना है तो उस के कहने का अर्थ इतना था कि उसे उनके मसीही जीवन में आगे चलने और उनकी उन्नति करते रहने पर ध्यान था।

पौलुस ने अपने भाइयों को यह भी बताया कि वह उन के लिए **धन्यवाद करना नहीं छोड़ता**। पौलुस ने अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करने के लिए लोगों की एक लम्बी सूची बनाई हुई थी। "धन्यवाद करना" यूनानी क्रिया शब्द eucharisteo का अनुवाद है जिसका मूल अर्थ है "अच्छा अनुग्रह"। पौलुस अपने पत्रों के प्राप्तकर्त्ताओं के बारे में जो कुछ जानता था उसके लिए लगातार परमेश्वर को धन्यवाद देता था। वह उनके विश्वास, और प्रेम के लिए, और उस सब के लिए जो उन के द्वारा परमेश्वर कर रहा था, धन्यवादित होता था।

आयतें 16, 17, धन्यवाद करने के अलावा पौलुस ने कहा कि वह इफिसियों को अपनी **प्रार्थनाओं** में याद करता है। "प्रार्थनाओं" यूनानी संज्ञा शब्द proseuche का अनुवाद है, जिसे आमतौर पर नये नियम में "प्रार्थना" के लिए इस्तेमाल किया गया है। अगली आयत में हम उन विनतियों को देखते हैं, जो उस ने परमेश्वर के सामने कीं।

पौलुस का **हमारे प्रभु यीशु मसीह** के **परमेश्वर** और "पिता" का हवाला आयत 3 का स्मरण दिलाता है। एस.डी.एफ. सैलमण्ड ने लिखा है:

> अनादि परमेश्वरत्व में पुत्र को पिता से, जो ईश्वरीयता का स्त्रोत है, जीवन मिला है और उस अर्थ में जिस में *पुत्र पिता* के अधीन होता है जब कि उस में वही ईश्वरीय अस्तित्व है, अधीन है। छूटकारे की हमारे प्रभु की सेवकाई में, चाहे अनादि पिता का पुत्र, परमेश्वर का मसीह है, परन्तु परमेश्वर *उसे भेजकर* [गलातियों 4:4], उसे ऊंचा करके [फिलिप्पियों 2:9], उस से राज्य को वापस पाकर [1 कुरिन्थियों 15:24] उस में प्रकट होता है। उस के मिशन, उस के मनन, उस के आधिकारिक कार्य और सम्बन्धों के विषय में, अपने परमेश्वर के रूप में उस के पास परमेश्वर है, जिस की आज्ञा उस ने पाई है और छुड़ाने की जिस की मंशा को उसे पूरा करना है।

पिता की महिमा के स्त्रोत के रूप में परमेश्वर या महिमा देने वाले के रूप में परमेश्वर के लिए कहा गया हो सकता है। इन शब्दों का अर्थ "पिता जिस की महिमा है" के अर्थ के रूप में देखना बेहतर हो सकता है। कैनथ एस. वुएस्ट के अनुसार

"महिमा" से पहले निश्चित उप-पद "the glory" का अर्थ "महिमा" इस अर्थ में है कि पिता की महिमा है।" एंड्रयू टी. लिंकोन ने ध्यान दिलाने के बाद कि "महिमा" में "ईश्वरीय स्थिति और सामर्थ की शान" है, आगे कहा कि पौलुस के लेखों में "महिमा" और "सामर्थ" परमेश्वर की गतिविधि के अर्थ में समानार्थी शब्द हो सकते हैं। यह विचार परमेश्वर के होने की चमक अर्थात् उस के ईश्वरीय स्वभाव को इफिसियों के मनों को चमकाने के लिए जोड़ी गई होगी, जो कि उन आशिषों में से एक है, जिस के लिए पौलुस ने प्रार्थना की (1:18)।

पौलुस ने चाहा कि इफिसियों को परमेश्वर की ओर से **अपनी पहचान में, ज्ञान में, और प्रकाश की आत्मा** मिले ताकि उनमें उस की तीन विशेष प्रार्थनाएं (देखें 1:18, 19) पूरी हों। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का विचार है कि "आत्मा" "पवित्र आत्मा" होना चाहिए। परन्तु वचन में "आत्मा" से पहले कोई उपपद नहीं है, और संदर्भ परमेश्वरत्व में अन्य पुरूष का हवाला नहीं देता। पौलुस ने चाहा कि भाइयों को "ज्ञान और प्रकाश का आत्मा" मिले न कि वह ज्ञान और प्रकाश, जिसे आत्मा देता है। तौभी उन के जीवनों में आत्मा का काम था और आत्मा ने मनुष्यों को प्रेरणा देकर सुसमाचार का प्रकाश दिया था (1 कुरिन्थियों 2:13)।

कुलुस्सियों 1:9-11 में इस के साथ मेल खाता हवाला हमें इफिसियों के इस भाग को समझने में सहायता करता है। पौलुस ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग "सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो" जाएं। वह चाहता था कि कुलुस्सियों को आत्मिक समझ मिले, जिस से वे अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को लागू करने के लिए समझ और बुद्धि पाएं। अपेक्षित परिणाम यह था कि परमेश्वर का उनका ज्ञान बढ़े या वे परमेश्वर को पूरी तरह से जान लें।

"ज्ञान" (1:17 कुलुस्सियों 1:10) epignosis से लिया गया है, जिसका अर्थ "विशाल और अधिक विस्तृत जानकारी" है। "ज्ञान" के लिए यूनानी संज्ञा शब्द हदवेपे है। ज्ञान के विषय के साथ अधिक भागीदारी का संकेत देते हुए, और वह ज्ञान जिसका जानने वाले पर जबर्दस्त प्रभाव है, पूर्वसर्ग epi जोड़ा गया है।

हमें परमेश्वर का अधिक ज्ञान कैसे मिलता है? इस संदर्भ में परमेश्वर प्रार्थना के उत्तर में, अपने प्रकट किए गए संदेश में सच्चाइयों को लोगों को समझने, और सही ढंग से लागू करने में सहायता के लिए ज्ञान देता है। जितना परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध निकट होगा, उतना ही हम उसे बेहतर ढंग से जान पाएंगे। उत्तर मिली प्रार्थना, और परमेश्वर के उपाय का अनुभव करते हुए, हम समय के साथ आत्मिक रूप में बढ़ते हैं। इस आयत में पौलुस का उद्देश्य इफिसियों को और प्रकाशन दिलाना नहीं, बल्कि यह था कि उन्हें उस प्रकाशन को समझने और व्यवहार में लाने की समझ मिल जाए, जो परमेश्वर के पूर्ण ज्ञान तक पहुंचने के लिए उन के पास पहले से था। परमेश्वर के इस ज्ञान के साथ उन्हें वे तीन बातें मिल सकती थीं, जिन के लिए आयतें 18 और 19 में पौलुस ने प्रार्थना की।

आयत 18. "मन" मनुष्य की समझ, भावना, और इच्छा शक्ति का स्थान है। इस

बात को ध्यान में रखते हुए हम समझ सकते हैं कि बाइबल मनुष्य को अपने मन में सोचने (नीतिवचन 23:7; KJV; मत्ती 9:4), अपने मन से प्रेम करने (मत्ती 22:37), और मन से आज्ञा मानने (रोमियों 6:17) की बात क्यों करती है। पौलुस ने **तुम्हारे मन की आंखें** कहा, जिस से उसका अभिप्राय मानवीय भावना और वह इच्छा का स्थान था, जो प्राप्त की गई जानकारी पर विचार कर सकता है, तर्क दे सकता है, समझ सकता है, निर्णय दे सकता है, और काम कर सकता है। जब कोई परमेश्वर के संदेश को सुनता है, तो वह उसे स्वीकार या नकार सकता है। यदि वह इसे समझ के साथ स्वीकार करता है तो हम कह सकते हैं कि उस की आंखें खुली हुई हैं (लूका 24:31)। यदि वह इसे नासमझी, पूर्वधारणा या पक्षपात के कारण नकार देता हैं तो हम कह सकते हैं कि उस की आंखें बंद हैं या अंधी हैं (मत्ती 13:15, 16)। इस अर्थ में इस्तेमाल किया गया है ''मन की आंखें''। पौलुस ने इफिसियों के लिए प्रार्थना की कि "तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों।"

ज्योतिर्मय हों, इफिसियों के लिए वर्तमान के परिणामों के साथ कालांतर में हुई किसी बात को कहा गया है: "तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हो गई हैं, उस वर्तमान परिणाम के साथ कि अब तुम चमक गए हो।" यह ज्योति तब मिली थी, जब उन्होंने सुसमाचार को सुन कर माना था। अब वे ज्योति पाए हुए थे। इसलिए चमक या समझ में बढ़ने के लिए पौलुस की यह प्रार्थना थी जो उन्हें पहले ही मिल गई थी। "ज्योतिर्मय" उस के उलट है जो विश्वास में आने से पहले इफिसुस के लोग थे। "उनकी बुद्धि अन्धेरी" थी (4:18) और "पहले अंधकार" में थे; परन्तु पवित्र और मसीह में विश्वासी बनने के बाद वे "प्रभु में ज्योति" थे और उन्हें "ज्योति की सन्तान के समान" चलना आवश्यक था (5:8)।

इफिसी लोग उन लोगों में से थे जिनकी आंखें खुल गई थीं, और जो अंधकार में से ज्योति में बदल गए थे। वे शैतान के प्रभुत्व में से परमेश्वर के प्रभुत्व में चले गए थे। ताकि वे पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ मीरास पा सकें, जिन्हें मसीह में विश्वास के द्वारा पवित्र किया गया है (देखें प्रेरितों 26:18)। उन्हें इस समय में जो उन्हें मिली थी बढ़ना आवश्यक था।

तीमुथियुस के आगमन से उत्साह

अर्ल डी. एडवर्डस

थिस्सलुनीके में तीमुथियुस का मिशन (3:1-5)

इसलिये जब हम से और न रहा गया, तो हम ने यह ठहराया कि एथेन्स में अकेले रह जाएँ; और हम ने तीमुथियुस को, जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए, कि कोई इन क्लेशों के कारण

डगमगा न जाए। क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। क्योंकि पहले ही, जब हम तुम्हारे यहाँ थे तो तुम से कहा करते थे कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही हुआ है, जैसा कि तुम जानते भी हो। इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।

आयत 1. इसलिए शब्द पौलुस का थिस्सलुनीकियों को देखने और उनके हाल चाल जानने की तीव्र इच्छा को प्रकट करता है (2:17)। **हमसे और न रहा गया** [*स्टेगो*] "क्रिया, स्टेगो का अर्थ केवल 'ढांकना' ही नहीं है...बल्कि इस क्रिया का अर्थ 'किसी को सहने के लिए खड़ा होना' भी है।" पौलुस की इच्छा इतनी तीव्र हो गई थी कि जब वह एथेन्स में ठहरा हुआ था तो उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजना **उत्तम समझा** कि उनकी खबर ले आए। थिस्सलुनीके के भाई विश्वास में अभी अपरिपक्व हैं जो अपने ही देश वासियों के हाथों दु:ख उठा रहे हैं (2:14), और पौलुस को लगा कि यदि कोई उत्साहित करने के लिए उनके पास न गया तो कहीं वे दबाव में आकर हियाव न छोड़ दें।

यह तथ्य पौलुस के यात्रा की इतिहास का एक और विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करता है जो प्रेरितों के काम के पुस्तक में नहीं पाया जाता है। स्पष्ट रूप से जब सीलास और तीमुथियुस ने एथेन्स में उसका पीछा किया (प्रेरित 17:14, 15), तब वे उसके साथ कुछ समय के लिए ठहरे थे। तब पौलुस ने तीमुथियुस को वापस थिस्सलुनीके भेजा था (आयत 2)। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि सीलास को भी थिस्सलुनीके के आस पास के क्षेत्र (संभवत: बिरिया) में भेज दिया गया होगा क्योंकि पौलुस **एथेन्स** में **अकेले ही रह** [*काटालैपो*, "पीछे छोड़ देना" या "त्याग देना"] गया था। पौलुस, अन्य जातियों के क्षेत्र में था जहाँ मसीह के बारे में कुछ भी सुनने को नहीं मिलता था। इसलिए, विशेषकर ऐसी परिस्थिति में वह किसी की सहायता चाहता था, और वह उनके सुख समृद्धि के लिए कीमत चुकाने के लिए भी तैयार था। एथेन्स में अपने साथ हुये नकारात्मक अनुभव के कारण वह कुरिन्थ चला गया जहाँ सीलास और तीमुथियुस, जो मकिदुनिया (जहाँ थिस्सलुनीके और बिरिया स्थित है) से वापस लौटे थे, उनसे जा मिले (प्रेरित 18:1–5)।

आयत 2. तीमुथियुस का विवरण पौलुस के **भाई** के संदर्भ में किया गया है जिसमें एक पारिवारिक परिवेश दिखाई देता है, और यह किसी के उच्च या नीचे होने को नहीं दर्शाता है। वह **परमेश्वर का सेवक** के रूप में वर्णित किया गया है। यह बहुत ही उच्च प्रशंसासूचक विवरण है जो यह प्रकट करता है कि तीमुथियुस ने पौलुस या किसी अन्य व्यक्ति की सेवा नहीं की बल्कि वह परमेश्वर के कार्य में परमेश्वर का सहकर्मी था। इस आयत में "सहकर्मी" युनानी शब्द (*सुनेरगोस*) का हिंदी रूपांतरण है। जबकि, कुछ प्रतिलिपि में यह (डियाकोनोस) उद्‌धृत किया है। डियाकोनोस को रोमियों

16:1 में "कलीसिया की सेविका" अनुवाद किया गया है और 1 तीमुथियुस 3:8 में भी यही शब्द पाया जाता है। फिर भी, जहाँ कहीं इस शब्द को किसी आयत में दर्जा नहीं दिया गया है वहाँ इसका अर्थ सेवक या दास है। मसीह **के सुसमाचार में** तीमुथियुस एक "सेवक" है। सुसमाचार प्रचारकों का कार्य इस सुसमाचार को बताना है कि मसीह पापियों को खरीदने के लिए मरा है। पौलुस ने तीमुथियुस की अति प्रशंसा की है ताकि वह उनको यह बता सके कि उसने तीमुथियुस को अपनी जगह भेजकर उनको किसी भी बात में कम नहीं आँका है।

थिस्सलुनीकियों को उत्साहित या स्थिर करने के लिए ही तीमुथियुस को वहाँ भेज दिया गया था। "स्थिर करने" के लिए यूनानी शब्द (*स्टेरिजो*), प्रयोग किया गया है जिसका "अर्थ 'ठीक करना,' 'उत्साहित करना' है, और यही नए विश्वासियों की आवश्यकता है – यह उस प्रकार का कार्य है जो उन्हें विश्वास में स्थिर करता है।" तीमुथियुस को उन्हें उनके **विश्वास** के विषय में **समझाने** के लिए भी भेजा गया था (तुलना करें 1:8; 3:5–7; 5:8), कि उनका उत्साह बढ़ाएं या फिर वे हियाव बांधे।

आयत 3. तीमुथियुस को उन्हें उत्साहित करने के लिए भेजा गया था ताकि यह निश्चित किया जाए कि वे इन सताने वालों के कारण **निराश** न हों या फिर वे परमेश्वर के समीप से दूर न हट जाएं, जैसे RSV कहता है कि उनकी एक ऐसी स्थिति ना हो जाए कि वे परमेश्वर से दूर हो जायें। "ये सताने वाले" या परेशानी उन्हीं के स्वदेशी भाई हैं जिसका विवरण 2:14 में पाया जाता है। पौलुस ने कहा कि वे जानते थे कि सताव/परीक्षा आएगी क्योंकि उसने अगले आयत में लिखा है कि वे इस बात की अपेक्षा करें। इस प्रकार की परीक्षा हमेशा शारीरिक नहीं होती है लेकिन वे कभी–कभी हमारे अपने करीबी मित्रों के द्वारा भी आती है। इस प्रकार का विचार धारा 2 तीमुथियुस 3:12 में भी पाया जाता है (तुलना करें यूहन्ना 15:19; मत्ती 10:34)।

आयत 4. कहा करते थे, यूनानी शब्द (*प्रोएलेगोमेन*), का अनुवाद है जो (*प्रोलेगो*) का अपूर्ण भूतकाल है। अपूर्ण क्रिया किसी कार्य को बार–बार दोहराने की ओर इशारा करता है जिसका उचित अर्थ कहा करते थे, ही है। उसने उन्हें सताव के बारे में बार–बार चेतावनी दी थी। फिर भी, यदि किसी व्यक्ति ने इसका अनुभव नहीं किया है तो वह उसको "चौंका देगा" और उसे बार बार चेताने के बाद भी वह निरूत्साह हो जाएगा। इसी बात का पौलुस को भय था।

आयत 5. जब उसकी चिंता बढ़ती गई और **रहा न गया** तो उसने तीमुथियुस को उनका हाल जानने के लिए भेजा। उसे डर लग रहा था कि कहीं **परीक्षा करने वाले** (शैतान, मत्ती 4:3–5) ने उन्हें धोखा तो नहीं दिया और उन्हें गिरा तो नहीं दिया, जिससे कि पौलुस की सारी **मेहनत पर** पानी फिर जाए कि थिस्सलुनीकियों की आत्मा नष्ट हो जाए। (केनोस [*केनोस*], "व्यर्थ" संबंधित चर्चा 2:1 में देखें।)

पौलुस ने प्रथम पुरूष व्यक्तिगत सर्वनाम "मैं" प्रयोग किया है जो यह दिखाता है कि वह व्यक्तिगत रूप से उनकी चिंता करता था, और सभी प्रकार के विरोध के बावजूद

भी तीमुथियुस को उनके पास भेजने का उसका अपना विचार था। उसने उन्हें नहीं त्यागा था।

तीमुथियुस के संदेश के कारण आनंद (3:6–10)

पर अभी तीमुथियुस ने, जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आया है, तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया, और इस बात को भी सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। इसलिये हे भाइयो, हम ने अपने सारे दु:ख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं। और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें? हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं कि तुम्हारा मुँह देखें और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें।

आयत 6. जब पौलुस ने यह पत्री लिखी तो उस समय तीमुथियुस, थिस्सलुनीके की यात्रा पूरी करके कुरिन्थुस पहुँचा था, जहाँ पौलुस एथेन्स से तीमुथियुस के थिस्सलुनीके जाने के बाद चला गया था (प्रेरित 18:5)। पौलुस ने कहा कि तीमुथियुस ने थिस्सलुनीकियों के बारे में उसे **सुसमाचार सुनाया**। "सुसमाचार सुनाया" यूनानी शब्द *यूवांगलिज*, से उद्‌धृत है जिसका अर्थ "सुसमाचार सुनाना या घोषणा" करना है। यह संदर्भ एक एक करके "सुसमाचार सुनाने" का स्पष्ट उदाहरण है (तुलना करें प्रेरित 8:4)।

यह उनके **विश्वास और प्रेम** का "सुसमाचार" था। उनका विश्वास, परमेश्वर पर उनके भरोसे को प्रकट करता है जो उन्हें "कार्य" करने के लिए उत्साहित करता है, और उनका "प्रेम" परिश्रम करने के लिए उन्हें विवश करता है (1:3)। वस्तुत:, सच्चा प्रेम किसी न किसी प्रकार का कार्य प्रकट करता है (तुलना करें 1 यूहन्ना 4:10)। इसके साथ ही जो सुसमाचार तीमुथियुस लाया वह यह था कि थिस्सलुनीकी अभी भी पौलुस को **प्रेम के साथ** स्मरण करते हैं। इसका प्रमाण यह है कि पौलुस के विरोधी थिस्सलुनीकियों को इस बात के लिए नहीं मना सके कि पौलुस एक झूठा शिक्षक है और वह उन्हें धोखा देने का प्रयास कर रहा है (2:3 NIV)। वे अभी भी उसे देखना **चाहते थे जैसे उसने** भी उन्हें देखने की इच्छा प्रकट की थी (2:17)। पौलुस संभवत: इस बात से परेशान नहीं था कि उन्हें उसके बारे में कैसा लगता है। वह यह सोच रहा था कि यदि थिस्सलुनीकियों ने उसके विरोधियों की बातों को माना तो इस बात की सबसे अधिक संभावना यह है कि वे अपने आचरण या शिक्षा, या दोनों से भटक जाएंगे जो उनके विनाश का कारण ठहरेगी।

आयत 7. जब पौलुस ने तीमुथियुस के लौटने की प्रतीक्षा, पहले एथेन्स में और बाद में कुरिन्थुस में की, तो वह **दु:ख और क्लेश** सह रहा था। एथेन्स में वह निसंदेह मूर्तियों के कारण दुखी था जो शहर में भरी पड़ी थी। (प्रेरित 17:16–18)। कुरिन्थुस में जो हठीले यहूदी रहते थे उन्होंने निश्चय ही उसको दु:ख पहुँचाया था (प्रेरित 18:5, 6)। तीमुथियुस से संदेश मिलने के बाद थिस्सलुनीकियों के **विश्वास** के कारण – कि

वे सातव के बावजूद, लगातार परमेश्वर और उसके मार्गों पर भरोसा रखते हैं, पौलुस को **शांति** मिली।

"शांति मिली" और "उत्साहित करना" दोनों एक ही यूनानी शब्द (*पाराकालेओ*) का अर्थ है जिसका विस्तृत अर्थ "प्रोत्साहन के द्वारा सहायता करना" है और जिसका प्रयोग दूसरी आयत में भी किया गया है। जॉर्ज ब्रौमैन के अनुसार नए नियम में 109 बार *पाराकालेओ* शब्द का प्रयोग हुआ है और इसका अर्थ: (a) बुलाना, निमंत्रण देना, पूछना, याचना करना; (b) प्रोत्साहित करना; (c) ढाढ़स बंधाना, उत्साहित करना, इत्यादि है। संज्ञा रूप *पाराक्लेसिस*, का अर्थ प्रोत्साहन, उत्साह, निवेदन, याचना, शांति या ढाढ़स, धैर्य है। अक्षरशः, यूनानी लेख का यह अर्थ है कि उसको "तुम्हारे बारे में" नहीं अपितु "तुम पर" (*एप ह्युमिन*) शांति मिली। "इस प्रकार के संबंध में, 'तुम पर' एक असामान्य पूर्वसर्ग है और इसकी महत्वता यह है कि पौलुस का नया जोश थिस्सलुनीकियों पर आधारित था...और यह संबंध जो छाप यहाँ छोड़ता है वह यह है कि उस जोश ने पौलुस को, जिस समस्या में वह फंसा था, उससे ऊपर उठने में सहायता की।"

आयत 8. **प्रभु में स्थिर रहो** (*स्टेको*) का अर्थ यह है कि अपने आपको "दुखी" न होने देना है (3:3)। सकारात्मक रूप से इसका अर्थ "सहनशीलता" दिखाना है (1:3; NIV), जिसका निर्धारण "कार्य" और "परिश्रम" से किया जाता है (1:2, 3)। इसका तात्पर्य यह हुआ कि "प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाना है" (1 कुरिन्थियों 15:58) न कि इसके विपरीत संदेह या दुविधा जताना है।, स्टेको, "कालांतर में पूर्णकाल क्रिया रूप *हिस्टेमी*, से विकसित से विकसित हुआ है, जिसमें 'स्थिर रहने' का विचार पाया जाता है...।"

पौलुस का आनंद यह था कि जब उसने सुना कि वे अपने आपको संवार रहे हैं तो इस संदेश ने उसको रेंग रेंगकर जीने के बजाय भरपूरी **से जीने** के लिए प्रेरित किया कि वह अपने आप में आनंद मनाए। यह पौलुस के आत्मिकता के बारे में बहुत कुछ बताता है। उसको सच्चा आनंद तब मिलता है जब वह लोगों को आत्मिक रूप से बढ़ते हुए देखता है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि वे अपना मन "स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में लगाते हैं" (कुलुस्सियों 3:1-4)। क्या हम पौलुस के जैसे हैं? क्या हम जब अपने भाइयों को, विश्वासियों को आत्मिक रूप से बढ़ते हुए देखते हैं, तो क्या हम आनंदित होते हैं? हम सबसे अधिक उत्साहित कब हुए? जब कलीसिया उन्नति कर रही थी या जब हमारा चहेता दल जीत रहा था?

आयत 9. हमने पहले यह देखा कि पौलुस ने लगातार और नित्य प्रार्थना की, और इन प्रार्थनाओं में थिस्सलुनीकियों के लिए विशेष धन्यवाद भी शामिल था (1:2, 3 का विश्लेषण देखें)। यहाँ हमें यह देखने को मिलता है कि परमेश्वर ने थिस्सलुनीकियों को आत्मिक रूप से सुदृढ़ किया, जिस कारण पौलुस को अति आनंद प्राप्त हुआ, जिसके लिए उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर भी वह कहता है कि उसको जितना आनंद मिला उतना उसने **परमेश्वर का धन्यवाद** नहीं दिया। यूनानी में अक्षरशः "इसको ऐसा

पढ़ा जा सकता है, 'हम परमेश्वर को इसके बदले किस प्रकार का धन्यवाद दे सकते हैं?' जहाँ क्रिया, *अंतापोदिदोमी*, एओरिस्ट इनफिनिटी काल (2 थिस्सलुनीकियों 1:6) में है, जिसका सारांश, 'यथोचित वापस करना है।"

हालांकि, थिस्सलुनीकियों के हृदय भी अत्याधिक हर्ष से भर उठे थे जब उन्होंने यह पढ़ा कि पौलुस ने परमेश्वर को सारा धन्यवाद उन्हीं के कारण दिया था (देखें आयत 6-10, जहाँ पूरा जोर "तुम" और "तुम्हारे" पर दिया गया है)। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि यह आनंद हमारे परमेश्वर के सम्मुख था या "फिर हमारे परमेश्वर के उपस्थिति" में था। स्पष्ट रूप से, पौलुस का यह तात्पर्य था कि जो आनंद उसको और उसके सहकर्मियों को मिला वह स्वार्थ से भरा नहीं था। बल्कि यह ऐसा था जिसके लिए वे **परमेश्वर के सम्मुख** सब कुछ रखने के लिए तैयार थे और वही उनको परखे क्योंकि उनकी इच्छा अपनी महिमा करने की नहीं बल्कि थिस्सलुनीके में रहने वाले लोगों के उद्धार की थी।

आयत 10. कि पौलुस और उसके सहकर्मियों ने रात और दिन प्रार्थना की। यह उनके प्रार्थना के अवधारणा के बारे में बहुत कुछ बताता है। बेशक वे इसके प्रभाव पर विश्वास करते थे (तुलना करें याकूब 5:16)। उन्होंने प्रार्थना की कि पौलुस **उनका चेहरा** देखे या फिर वह स्वयं उन्हें देख आए। सत्य यह है कि जब उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजा था तो वह पूर्णतया संतुष्ट नहीं था। वह स्वयं उनसे मिलना चाहता था ताकि वह उनकी **घटी** (यदि कोई हो तो) **को पूरी करें**। उनके सीखने में कुछ कमी रह गई थी। "पूरी करे" यूनानी शब्द (*काटारिद्जो*), से अवतरित है जिसका अर्थ जालों (मत्तों 4:21) या मनुष्यों (गलातियों 6:1) को "सुधारना" है। ए. टी. रॉबर्टसन के *काटारिद्जो* का विश्लेषण देखें।

थिस्सलुनीकियों के बारे में तीमुथियुस की सूचना कुल मिलाकर ठीक थी, लेकिन उनको और अधिक शिक्षा और परिपक्क होने की आवश्यकता थी ताकि वे "और अधिक बढ़ते जाएं" (4:1, 10)। पौलुस का उनको और अधिक शिक्षा देने का उद्देश्य यह था कि वे अपने विश्वास की कमी पर जय प्राप्त कर सके। इस संदर्भ में, "विश्वास" संभवतः शिक्षा की उस धारणा को प्रकट करता है जिसको थिस्सलुनीकियों ने ग्रहण किया था और इसमें जो कमी थी वह प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन के संबंध में था। इसी संदर्भ में "विश्वास" शब्द का प्रयोग यहूदा 3 में पाया जाता है।

मसीह का विश्वास योग्य सेवक

ऑवन डी आल्ब्रट

उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से पाई, जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रकट किया।

इपफ्रास वह दूत था जिसने कुलुस्सियों को सिखाया था। सत्य की इस भाई को समझ या तो पौलुस के द्वारा सिखाए जाने से हुई थी या सीधे पवित्र आत्मा की ओर से सिखाए जाने से मिली थी। पवित्र आत्मा का दान इसे पौलुस के हाथ रखने के द्वारा दिया गया हो सकता है।

कुलुस्सियों को सुसमाचार के सत्य की **शिक्षा** उसी प्रकार मिली होगी, जैसे दूसरे सब लोगों को लेनी आवश्यक है। आरम्भ में इसका प्रसार विशेष रूप में प्रचार और शिक्षा के द्वारा हुआ। लिखित रूप में मिल जाने के बाद सत्य की शिक्षा पढ़कर भी ली जा सकती है (इफिसियों 3:3-5)।

कुलुस्सियों में पवित्र आत्मा ने प्रचार नहीं किया, न ही स्वर्गदूतों ने प्रचार किया (1 पतरस 1:10-12)। यीशु ने आत्मा के द्वारा प्रेरितों और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं पर सत्य को प्रकट किया (यूहन्ना 14:26)। अन्तिम भोज के समय यीशु जब प्रेरितों के साथ था तो उसने उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशन देने का वचन दिया था। उस अवसर पर कही गई उसकी बातें विशेष रूप में उनकी थी: "ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं" (यूहन्ना 14:25); "और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो" (यूहन्ना 15:27); "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" (यूहन्ना 16:12)।

प्रेरितों और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने सत्य के भण्डारों का काम किया, जिन में से सिखाने वाले जानकारी ले सकते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को दूसरों को वही बातें सिखाने की ताड़ना दी जो उसने उसे सिखाई थीं। ताकि वे दूसरों को भी वही बातें सिखा सकें (2 तीमुथियुस 2:2)। प्रेरित और भविष्यद्वक्ता कलीसिया की नींव थे (इफिसियों 2:20), और उन्होंने प्रभु की आज्ञाओं को लिखा (1 कुरिन्थियों 14:37)।

इपफ्रास नाम इपफ्रुदितुस का जो लातीनी नाम "वेनुस्तुस" (जिसका अर्थ है "सुन्दर" या "बहुत") से मेल खाता है, संक्षिप्त रूप है। पौलुस का एक लम्बे नाम वाला सहयात्री था, वह भाई जिसे फिलिप्पी में भेजा था (फिलिप्पियों 2:25; 4:18)। इपफ्रुदितुस को इस इपफ्रास से न उलझाया जाए, क्योंकि इपफ्रास कुलुस्से का रहने वाला था। इपफ्रास सम्भवतया कुलुस्से में सुसमाचार लेकर जाने वाला पहला व्यक्ति था। कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र लिखते समय शायद वह रोम में था। पौलुस को कुलुस्से, लौदीकिया, और हियरापुलिस की कलीसियाओं की स्थिति का पता इपफ्रास से मिला था। शायद उसने पौलुस के इफिसुस में प्रचार करते समय इन नगरों में प्रचार किया था (देखें प्रेरितों 19:10)। स्पष्टतया वह रोम में कलीसियाओं की स्थिति बताने के लिए और उसके कारावास में उसका साथ देने के लिए गया था।

पौलुस मसीह के लिए इपफ्रास के समर्पण और सेवा को बहुत मानता था। उसने उसे "मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी" (फिलेमोन 23), "हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है" (कुलुस्सियों)। "मसीह यीशु का

दास" कहा (कुलुस्सियों 4:12)। पौलुस ने अपने लिए कई बार "दास" शब्द का इस्तेमाल किया, परन्तु दूसरों के लिए केवल दो बार जिसमें इपफ्रास (4:12) और तीमुथियुस (फिलिप्पियों 1:1) शामिल है।

"हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक" (1:7)

मसीही लोगों के लिए और अपने साथ काम करने वाले दूसरे लोगों के लिए पौलुस का प्रेम वही प्रेम था, जो उसने इपफ्रास के लिए दिखाया। अपने सहकर्मियों के सम्बन्ध में जिनमें इपैनितुस (रोमियों 16:5), अम्पलियातुस (रोमियों 16:8), इस्तखुस (रोमियों 16:9), पिरसित (रोमियों 16:12), तीमुथियुस (1 कुरिन्थियों 4:17; 2 तीमुथियसु 1:2), तीमुथियुस (कुलुस्सियों 4:7; इफिसियों 6:21), उनेसिमुस (कुलुस्सियों 4:9), लूका (कुलुस्सियों 4:14), और फिलेमोन (फिलेमोन 1) के सम्बन्ध में प्रिय (agapetos) शब्द का इस्तेमाल किया। विभिन्न मण्डलियों को लिखते हुए वह अक्सर उन्हें "प्रिय" कहता था। पौलुस चाहे अभी रोम में नहीं गया था फिर भी उसने रोम की कलीसियों को "हे प्रियो" कहकर पुकारा (रोमियों 12:19)। रोम के लोगों के नाम व्यक्तिगत सलाम भेजते हुए उसने संकेत दिया कि वह उस मण्डली के लोगों को जानता है, उसने कुलुस्से की कलीसिया के सम्बन्ध में "प्रियो" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, सम्भवतया इसलिए क्योंकि वह उन में से कइयों को व्यक्तिगत रूप में नहीं मिला था।

पौलुस के शब्दों में इपफ्रास एक **दास** सेवक (sundoulos) था जो sun (के साथ) doulos (दास) नामक दो शब्दों का मेल है। उसने पौलुस के साथ काम किया था। जो अपने आपको मसीह का गुलाम यानी अपना नहीं, बल्कि यीशु का मानता था। उसने कुरिन्थियों को याद दिलाया था कि यह बात उन पर भी लागू होती है (1 कुरिन्थियों 6:19)। मसीह की कलीसिया के लोगों के रूप में उन्हें यीशु के लहू से खरीदा गया था (प्रेरितों 20:28)। पौलुस इपफ्रास को केवल यीशु का दास नहीं बल्कि एक **संगी** दास भी मानता था जिसके साथ वह यीशु की सेवा करता था।

यीशु ने अपने एक दृष्टांत में (मत्ती 18:28-33) और अपने द्वितीय आगमन की बात करते हुए (मत्ती 24:44), एक गैर-धार्मिक अर्थ में **सह** सेवकों की बात की। यह अभिव्यक्ति केवल एक बार पौलुस के लेखों में मिलती है, जो तुखिकुस के लिए इस्तेमाल हुई है।

"जो हमारे लिए मसीह विश्वासयोग्य सेवक है" (1:7)

पौलुस ने इपफ्रास को **विश्वासयोग्य सेवक** होने के रूप में वर्णित किया। "विश्वासयोग्य" (pistos) आम तौर पर लगातार सेवा में रहने वाले के लिए होता है चाहे लोगों की हो (मत्ती 24:45; 25:21; लूका 12:42) या परमेश्वर की (1 कुरिन्थियों 1:9)। किसी व्यक्ति के विश्वासयोग्य होने के लिए इस्तेमाल होने पर इस शब्द का अर्थ समर्पित सेवा हो जाता है। इसका अर्थ "भरोसे योग्य कथन" के रूप में विश्वासनीयता भी हो सकता है (1 तीमुथियुस 1:15; 3:1)। कई मामलों में

परमेश्वर के विश्वासयोग्य होन के लिए इस्तेमाल होने पर कई मामलों में यह हवाला मसीही व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता है (उदाहरण के लिए देखें 1 तीमुथियुस 1:12)।

"सेवक" शब्द "बंदी सेवक" के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द जिसका इस्तेमाल आयत 7ख में हुआ है, अलग है। यहां "सेवक" (diakonos) का अर्थ वह व्यक्ति है जो अधीनता से सेवा करता है। आम तौर पर इसका इस्तेमाल उनके लिए किया जाता है जो दूसरे की सेवा करते हैं (मत्ती 20:26; 23:11) – जैसे सेवक (मत्ती 22:13; यूहन्ना 2:5), सरकार (रोमियों 13:4), परमेश्वर की सेवा करने वाले (2 कुरिन्थियों 6:4), शैतान की सेवा करने वाले (2 कुरिन्थियों 11:15), और डीकनों के रूप में सेवा करने वाले (फिलिप्पियों 1:2; 1 तीमुथियुस 3:8, 12)। पौलुस ने अपने लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया (कुलुस्सियों 1:23), इस कारण कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि इपफ्रास डीकन के रूप में सेवा करता था या नहीं। ऐसे ही अर्थ वाला एक और यूनानी शब्द diakonia (अनुवाद "सेवकाई") डीकन के पद के लिए कभी इस्तेमाल नहीं हुआ (प्रेरितों 1:17; 6:4; रोमियों 12:7 भी देखें, जहां इस शब्द के रूपों का अनुवाद "सेवा" और "सेवा करना" हुआ)।

इपफ्रास मसीह के विश्वासयोग्य सेवक के रूप में पौलुस के काम में उसका समर्थन करता और उसकी सहायता करता था। पौलुस की सहायता करते हुए वह उन लोगों की भी सहायता करता था, जिनमें वह प्रचार करता था।

"जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है" वाक्यांश में **हमारे** लिए के यूनानी शब्द (hemon) में एक विभिन्नता है। कुछ अनुवादों में जहां "हमारी ओर से" (NASB; NIB; ASV; RSV), जबकि अन्यों में humon के अनुवाद के रूप में "तुम्हारे लिए" है (KJV; CEV)। द *ग्रीक न्यु टैस्टामैंट* के सुधरे हुए चौथे संस्करण में humon "तुम्हारे" का पक्ष लेता है। अधिकार का वचन निर्णायक नहीं है इस कारण दोनों में से कोई एक अस्वीकार किया जा सकता है। किसी भी अनुवाद से अर्थ में इतना फर्क नहीं पड़ता। यदि humon को सही ढंग से पढ़ा जाए, तो इपफ्रास ने सुसमाचार फैलाने में पौलुस की सहायता की, जिससे पौलुस के काम को और उन लोगों को जिनमें उसने प्रचार किया लाभ मिला। यदि hemon सही है तो पौलुस यह संकेत दे रहा था कि कुलुस्सियों के लिए मसीह के दूत के रूप में इपफ्रास को पौलुस की पूरी स्वीकृति है।

"उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया" (1:8)

कुलुस्सियों को परमेश्वर के अनुग्रह का पता इपफ्रास से चला था। उसने उन्हें केवल सिखाया ही नहीं था, बल्कि उनके विषय में अच्छी रिपोर्ट भी लेकर आया था। पौलुस और तीमुथियुस को दी गई उसकी रिपोर्ट में कुलुस्सियों के प्रेम और आत्मिक उन्नति की बात की। केवल कुछ आयतें (1:4), पौलुस ने सब पवित्र लोगों के लिए उनके प्रेम के लिए उन्हें सराहा था। अब उसने उस जानकारी का स्त्रोत इपफ्रास से

मिली रिपोर्ट बताई।

कुलुस्सियों के **प्रेम** की बात करते हुए जो आत्मा में है, क्या पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा से था? कई अनुवादकों ने आयत 8 में आत्मा के लिए अंग्रेजी बाइबलों में "spirit" (pneuma) के लिए "s" बड़ा कर दिया है जिसका अर्थ यह है कि उनका मानना है कि पौलुस पवित्र आत्मा की बात कर रहा था। कुलुस्सियों 2:5 में यूनानी भाषा में जहां उपपद "the" का इस्तेमाल हुआ है, पौलुस का आत्मा का हवाला माना जाता है। कुलुस्सियों में केवल इन्हीं दो जगहों पर pneuma मिलता है। यदि आयत 8 में इसका अर्थ पवित्र आत्मा नहीं था तो पौलुस ने इस पत्र में पवित्र आत्मा का उल्लेख नहीं किया।

अपने पत्रों में पवित्र आत्मा की बात करते हुए यूनानी धर्मशास्त्र से पता चलता है कि पौलुस आम तौर पर "आत्मा" के साथ "पवित्र" को सुधार लेता था (रोमियों 5:5; 9:1) या "आत्मा" से पहले उपपद लगा देता था (रोमियों 2:29; 8:26, 27; गलातियों 3:2; 5:22)। परन्तु वह उपपद के इस्तेमाल में हमेशा एक समान नहीं रहता था (इफिसियों 3:5 और 4:4 में तुलना करें)। इस कारण अनुवादकों को यह निर्णय करना होगा कि उपपद का इस्तेमाल कब नहीं किया गया। विलियस हैंड्रिक्सन ने यह अवलोकन दिया है:

> चाहे ऐसे लोग हैं जिनका मानना है कि इसका [आयत 8 में] अर्थ केवल पवित्र आत्मा के किसी सम्बन्ध के बिना "आत्मिक प्रेम" है, यह विचार इस तथ्य के बावजूद पाया जाता है कि रोमियों 15:30; गलातियों 5:22; इफिसियों 3:16, 17 जैसी आयतों में मसीही प्रेम को निर्णायक ढंग से आत्मा के वास के फल के रूप में देखा जाता है।

यदि आयत 8 पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा था तो हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसका मानना था कि कुलुस्से के लोग आत्मा के गुणों से मेल खा रहे थे। उन में प्रेम सहित, आत्मा का फल था (इफिसियों 5:9)।

यूनानी धर्मशास्त्र में "आत्मा" से पहले कोई उपपद नहीं मिलता, इस कारण पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा के बजाय "आत्मा में" (मानवीय आत्मा) हो सकता है। कई प्रसिद्ध अनुवादों में "आत्मा में" है जो अंग्रेजी में बड़े अक्षर में है। अन्यों ने "आत्मा में प्रेम" और "तुम्हारा आत्मिक लगाव" वाक्यांश अनुवाद किया है।

यदि पौलुस के कहने का अर्थ "आत्मा में" था तो इसका अर्थ यूहन्ना 4:23, 24 के आराधना के संदर्भ में यीशु के "आत्मा" शब्द के जैसा ही है जहां कई अनुवादों में "आत्मा में" के लिए छोटा s लिखा गया है (KJV; NASB; NIV; NKJV; NRSV; RSV)। इसका अर्थ यह होगा कि उनका प्रेम केवल बाहरी दिखावा नहीं था बल्कि वह प्रेम था जो मानवीय आत्मा की गहराई में से निकला था। ऐसा शब्द उन के प्रेम की निष्कपटता का संकेत देता है।

क्या यरूशलेम बहुत दूर है?

डब्ल्यू. डग्लस हैरिस

"यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है" (1 राजाओं 12:28; पृष्ठभूमि के लिए पूरा अध्याय पढ़ें)। इस अध्याय में राहोबाम के गद्दी पर बैठने के बाद इस्राएल राज्य के विभाजन की बात मिलती है। राहोबाम ने लोगों की शिकायतों को दूर करने के लिए बूढ़े लोगों की सलाह लेने के बजाय अपने उम्र के जवानों की सलाह मानी थी। परिणाम यह हुआ कि दस गोत्रों ने विद्रोह करके यारोबाम को अपना राजा बनाने के लिए मिस्र में निर्वासन से बुलवा लिया। यारोबाम ने मूर्तिपूजा पर आधारित सरकार बनाई। इस डर से कि लोग यदि आराधना के लिए यरूशलेम को लौट गए (जो कि परमेश्वर द्वारा अधिकृत स्थान था) तो वे उसे छोड़ सकते हैं, उसने दान और बेतेल में सोने के बछड़े बनवाए। फिर उसने यह प्रचार करते हुए कि उनके लिए मन्दिर में आराधना के लिए यरूशलेम में जाना बहुत कठिनाई से भरा होगा, उनके विवेक को शांत कर दिया। शारीरिक आकर्षण और सहजता से प्रेम, तब भी खतरनाक था और अब भी।

यरूशलेम का प्राचीन आकर्षण

यरूशलेम का महत्व यहूदियों के लिए शुरू से रहा है, क्योंकि उनके मन में इसका विशेष आकर्षण और मोह था। यह उनका राजधानी नगर, शासन का केन्द्र, आराधना का स्थान था और इसे "महाराजा का नगर" कहा जाता था (मत्ती 5:35)। निर्वासन के दौरान दानिय्येल यरूशलेम की ओर मुंह करके प्रार्थना किया करता था और जब दासत्व में नहेम्याह को नगर की बिगड़ी हालत का पता चला तो वह रोने लगा था (दानिय्येल 6:10; नहेम्याह 2:3)। यहूदियों का यरूशलेम के प्रति प्रेम और लगाव भजन संहिता 137:5, 6 में बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से दिखाया गया है।

एक प्रतीकात्मक अर्थ में यरूशलेम नये नियम की कलीसिया के बहाल करने वालों के लिए उतनां ही महत्वपूर्ण है जितना प्राचीनकाल के इस्राएलियों के लिए था। इल्हाम से पतरस ने यरूशलेम को "आरम्भ में" बताया (प्रेरितों 11:15)। प्रेरितों 2 अध्याय की घटनाएं कई बातों के आरम्भ को चिह्नित करती हैं जैसे मानी जाने वाली आज्ञाओं के साथ-साथ स्थापित तथ्यों के रूप में सुसमाचार का सुनाया जाना, मसीह के लहू के द्वारा नई वाचा का दृढ़ किया जाना, उद्धार के लिए सुसमाचार की योजना, पापों की क्षमा के लिए मसीह के नाम में बपतिस्मा, ग्रेट कमीशन से सम्बन्धित मसीह की आज्ञाओं का आज्ञापालन, मसीह की कलीसिया का जन्म, मसीह द्वारा अधिकृत आराधना, मसीह द्वारा प्रेरितों को बांधने और खोलने का अधिकार दिया जाना, और दाऊद की गद्दी पर मसीह का शासन।

आज परमेश्वर की वास्तविक इच्छा को समझाने के लिए "यरूशलेम" शब्द का इस्तेमाल रूपक के रूप में किया जाता है। सुसमाचार सबसे पहले यरूशलेम में

सुनाया गया था, इसलिए वही सुसमाचार आज जब बिना बदलाव किए सुनाया जाता है तो इसे "वही पुराना यरूशलेम" " वाला सुसमाचार कहा जाता है।

बहुतों के लिए आज बहुत दूर

आज मसीही जगत में बहुत से लोगों को यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है यानी वे मनुष्य की बनाई सब धर्म शिक्षाओं तथा कैटेकिज़्मों को छोड़कर, उस कलीसिया को बहाल करने के लिए जिसका आरम्भ यरूशलेम में हुआ था, नये नियम को अपना विशेष मार्गदर्शक बनाने के लिए पीछे जाने को तैयार नहीं हैं। धार्मिक तौर पर रिश्तेदारों की ओर अपनी पीठ फेरने, उन रीतिरिवाज़ों का जिन्हें वे पीढ़ीयों से मानते आ रहे हैं, त्याग करने और यरूशलेम में वापस जाकर कलीसिया के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पैटर्न (नमूने) को मानने को तैयार नहीं हैं।

बहुतों को इफिसियों 4:4–6 वाली सात कदमों वाली योजना पर धार्मिक एकता को हासिल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है जिसमें बताया गया है कि एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही आत्मा, एक ही देह, एक ही आशा, एक ही बपतिस्मा, और एक ही परमेश्वर है। यह यरूशलेम वाला सुसमाचार है। कोई और योजना या आधार काम नहीं करेगा। साम्प्रदायिकवादी (डिनोमिनेश्नों की) फूट में यह एकता कभी हासिल नहीं होगी। कइयों को बपतिस्मे में वचन के अनुसार कार्य को बहाल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है। बपतिस्मे की जगह छिड़काव या उण्डेलने का बहाव आसान, सुविधाजनक और अनाधिकृत कार्य है। यरूशलेम का सुसमाचार यह बताता है कि बपतिस्मा पानी में दफनाए जाना है (कुलुस्सियों 2:12; रोमियों 6:3, 4)।

बहुतों के लिए मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा अधिकृत संगीत, संगीत की किस्म कण्ठ–संगीत (या अकापेला) को इस्तेमाल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)।

धार्मिक जगत के अधिकतर लोगों के लिए बपतिस्मे के वचन के अनुसार डिजाइन, कलीसिया के लिए वचन के अनुसार पद, कलीसिया के वचन के अनुसार धर्मसार, वचन के अनुसार आराधना, जिसमें हर हफ्ते प्रभु–भोज लिए जाने की सलाह है, यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है।

सारांश। क्या आपने यरूशलेम वाले सुसमाचार की आज्ञा मानी है? प्रेरितों 2:22–47 से हमें पता चलता है कि मसीह की प्रेरणा प्राप्त प्रेरितों से यरूशलेम में क्या अपेक्षा की जाती थी। उनके सुनने वालों ने मसीह की मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने के प्रचार को सुना था। हृदय छिद जाने पर वे यह पुकारते हुए पूछने लगे थे कि उद्धार पाने के लिए वे क्या करें; और मसीह में पहले से विश्वासी होने के कारण उन्हें बताया गया था कि वे अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा ले। यह "आरम्भ" था। क्या आपको यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है?